उपसंहार

प्रस्तावित शोध विषय ***'रंगमंचीय विन्यास की राजनीतिक अवधारणा'*** विषयानुसार परिकल्पनात्मक जाँच हेतु "रगमंचीय विन्यास के राजनीतिक पक्ष को खोजना" इन शोध प्रश्नों के साथ शोध प्रारंभ किया गया। 'क्या रगमंच में 'विन्यास' सिर्फ सजावट है? या इसकी कोई अपनी राजनीतिक व्याख्या या अवधारणा भी है? इन्हीं प्रश्नों के सहारे प्रस्तावित शोध के परिकल्पना तक पहुँचने की कोशिश की गई है।

शोध की विभिन्न प्रिक्रियाओं से गुजरते हुए पाया कि रगमंचीय विन्यास की कई व्याख्याएँ हैं - जिसमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक मुख्य हैं। मानव के सामाजिक, आर्थिक, संस्कृतिक, राजनीतिक व व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं से कला/विन्यास का जन्म हुआ है। मनुष्य स्वभाव से ही अपने-आप को अभिव्यक्ति करने का माध्यम ढूँढता रहा है, एक ऐसा माध्यम जो समाज को ज्यादा से ज्यादा प्रभावित कर सके, इसी खोज ने संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम रगमंच (कई विद्वानों का मानना है कि रगमंच संप्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है) को जन्म दिया। इन प्रक्रियाओं पर बात करते हुए निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि दुनियाँ की हर कला में कलाकार अपने समाज को अपने सोच, विचार व सिद्धांतों के अनुसार गढ़ने की कोशिश किया है तथा यही गढ़ना कला का सृजन कहलाता है।

एक ऐसी सृजनात्मक कला जिसके माध्यम से संबंधित व्यक्तियों, समूहों एवं समाज की अभिव्यक्ति होती है, और अभिव्यक्ति हमेशा हमारे वातावरण के प्रतिक्रियाओं से निर्मित होती है।

अतः शोध करते समय यह पाया गया कि रंगमंच एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें सच कुछ भी नहीं होता! तो प्रश्न उठता है कि मात्र झूठ, आडंबर के लिए इतना कुछ क्यों?, सच तो यह है कि रंगमंच सच को झूठ बनाकर प्रेक्षकों के सामने लाता है, समाज से संबंधित घटना में (नाटक) पात्र, मूल तौर पर उस नाटक से संबंध नहीं रखता, पर अप्रत्यक्ष तौर पर उससे गहरा लगाव होता है। रगमंच किसी एक घटना विशेष पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि वह एक चरित्र/घटना से कई संदर्भों या

समाज के रीतियों-कुरीतियों एवं मूल्यों-मर्यादाओं को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए 'मोहन राकेश' द्वारा लिखित नाटक 'आधे-अधूरे' को देखा जा सकता है। जोकि एक घर की कहानी से पूरे मध्यवर्गीय समाज के महत्वपूर्ण प्रश्नों को व्याख्यायित करता है। जगमोहन, बिन्नी आदि पात्र कोई एक व्यक्ति नहीं, वह हमारे समाज में संबंधित चरित्रों को नेतृत्व करते हुए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व संस्कृतिक संघर्ष तथा मध्यवर्गीय परिवार के पीड़ा से जुड़ते नजर आते हैं। अतः शोध के समय यह पाया गया कि नाटक/रगमंच समाज के किसी एक तत्व को लेकर आभासी यथार्थ रचता है जिसमें समाज में विकसित तमाम तरह के तत्वों को मंच पर आभासी यथार्थ की रचना कर प्रेक्षकों के साथ अपने विचार का आदान-प्रदान करता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि रगमंच एक ऐसा कलात्मक माध्यम है जिसमें प्रेक्षक व अभिनेता एक-दूसरे के समवेदनाओं को साथ-साथ जीते हैं, साथ-साथ हँसते हैं, साथ-साथ रोते हैं तथा एक दूसरे के प्रतिक्रियाओं से प्रभावित भी होते हैं यही कारण है कि रंगमंच को सजीव कला (live Art) के साथ-साथ अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम भी माना गया है।

शोध प्रश्नानुसार क्या रंगमंच के विन्यास में कोई राजनीति होती हैं? या सिर्फ रगमंच को सजाने वाला सजावटी समान है? इन प्रश्नों पर विचार करते हुए यह पाया गया कि रंगमंचीय विन्यास कभी भी सिर्फ सजाने का काम नहीं करता, विन्यास सजाने के साथ-साथ निर्देशक व विन्यासकर्ता के सोच, विचार व सिद्धांत आदि को रंगमंच के जरिए प्रेक्षकों तक संप्रेषित करने का सबसे बड़ा माध्यम है। आसान शब्दों में कहें तो विन्यास विचारों या सिद्धांतों का रैपर (rapper) है। दूसरे तरह देखें तो रंगमंच पूरी तरह से ***'बाजार के सिद्धांतों'*** पर कार्य करता नजर आता है, जिस प्रकार व्यापारी अपने उत्पाद को बाजार में उतारने तथा लोगों को आकर्षित करने के लिए अपने उत्पाद को आकर्षक बनाकर (Industrial design के द्वारा) उस उत्पाद से ग्राहकों के ऊपर हैमर (Hammer) करता है, ठीक उसी प्रकार रंगमंच से नाटककार, निर्देशक व विन्यासकर्ता अपने विचार, सिद्धांत व राजनीति को कलात्मक चाश्नी (विन्यास) में डालकर ऐसा स्वाद (flavor)

बनाता है, फिर उस ***'रगमंचीय विन्यासित स्वाद'*** (flavor) से प्रेक्षकों पर अपने विचारों, सिद्धांतों व राजनीति से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हैमर (Hammer) करता है। बस दोनों की दृष्टि अलग-अलग होती है एक ज्यादा से ज्यादा मुनाफ़ा कमाने के ताक में रहता है तो दूसरा मुनाफे के दूसरे पक्ष विचारों, सिद्धांतों के तहत सामाजिक बदलाव के साथ-साथ अपनी पहचान व कुछ धन (कुछ रंगकर्मी भी आज रगमंच को सिर्फ मुनाफ़ा कमाने का ज़रिया मान बैठे हैं) पर आश्रित रहता है।

आज जिस प्रकार भूमंडलीकरण, उदारआर्थिकनीति, बहुराष्ट्रवाद तथा मुक्त बाजार के दौर में 'विश्व बाजार' पृथ्वी पर उपस्थित हर वस्तु को बाजार का उत्पाद मात्र (यहाँ तक की प्रकृति संपदा–जल, हवा, नदी, पेड़ आदि को भी) मानता है, जिससे रगमंच आज अछूता कैसे रह सकता है - 'मार्क्स' के कथनानुसार ***"जहाँ उत्पाद (Production) है वहाँ लागत (Investment) है और जहाँ लागत (Investment है वहाँ मुनाफा (Profit) जरूर होगा, भले ही उसका स्वरूप अलग-अलग हो, और जहाँ मुनाफा (Profit) होगा वहीं स्वार्थ की राजनित होगी"।***[1] निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त संदर्भानुसार रंगमंच भी एक उत्पाद (Production) है तथा इसमें भी लागत (Investment) है तो जाहिर सी बात है कि नाटककार, निर्देशक, विन्यासकर्ता का भी अपना कोई मुनाफा जरूर होगा। चाहे वह वैचारिक हो, सैद्धांतिक हो, आर्थिक हो, संकृतिक हो व राजनीतिक हो या फिर बुद्धिजीवियों के दुनियाँ में अपना अस्तित्व स्थापित करने की होड़ हो। यहाँ न्यूटन महोदय को याद करना उपयोगी होगा। न्यूटन महोदय अपने गति नियम में कहते हैं कि ***"जो वस्तु जिस अवस्था में है उसी में रहना चाहता है, जब तक उसपर कोई बाहरी बल कार्य न करे, तथा इसके साथ यह भी कहते हैं कि "हर क्रिया के पीछे एक विपरीत प्रतिक्रिया होती है"।*** शोध के दौरान यह पाया कि यह सिद्धांत सिर्फ वस्तुओं पर नहीं बल्कि मनुष्यों पर भी लगता है,(सिर्फ इसमें बाहरी और आंतरिक दोनों बल कार्य करते हैं) जब तक मनुष्य को किसी वस्तु या पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती तब-तक वह कुछ भी नहीं

[1] बर्न्स एमिल, मार्क्सवाद क्या है, पृ॰ 68।

करना चाहता, यही कारण है कि रगमंच भी इस सिद्धांतों से इतर नहीं है। दुनियाँ का कोई भी नाटक समाज से अलग नहीं हैं इसके साथ-साथ यह हमेशा किसी न किसी क्रिया की प्रतिक्रिया रही है। उदाहरण स्वरूप संस्कृत व ग्रीक रंगमंच के उद्भव से लेकर आज तक के इतिहास हो देखा जा सकता है, शोध के दौरान यह पाया गया जिसे कि रंगमंचीय इतिहास का विशाल भू-पटल भी इस बात को साबित करने को तैयार है। कि ग्रीक रगमंच का उद्भव 'डायनेसिया' देवता को खुश करने के लिए जो समूह गान होता था उससे हुआ है, वहीं संस्कृत रंगमच का पहला नाटक त्रिपुरदाह/ समुद्रमंथन का मंचन दानवों के खिलाफ देवताओं के सत्ता को स्थापित करने का प्रयास दिखता है, तथा 'हेनरिक इब्सन' 'गुड़िया घर' में जो स्त्री स्वतंत्रता की बात करते हैं। 'सेमूएल बेकेट' का नाटक 'वेटिंग फॉर गोदो' में दो-दो विश्व युद्ध के बाद लोगों के चकना-चूर हुए विश्वास तथा आस्था का चित्रण है तथा आज के नाटक 'लाइतोंगबम पारींगानबा' के 'मिराज' जो उत्तर-पूर्व भारत में राज्य (Indian State) द्वारा किए जाने वाले दमन को चित्रित करता है को देखा जा सकता है जोकि शोध प्रशन के करीब खड़ा होता है।

जैसा की हम सब जानते हैं कि रगमंच यथार्थ की कल्पना मात्र होता है, नाटककार व निर्देशक की कल्पना को शाकार करने के लिए विन्यास तथा विन्यासकर्ता की मुख्य भूमिका होती है, निर्देशक विन्यास से ही रंगमंच पर यथार्थ को गढ़ता है।

निष्कर्ष को आगे बढ़ाते हुए मैंने पाया कि निर्देशक व विन्यासकर्ता अपने विचार को रखने के लिए विन्यास का उपयोग करता है, प्रस्तुत अध्यायों में विन्यास के तत्वों को राजनीतिक परिपेक्ष्य में देखा गया है ***"जीवन की सच्चा व गहरा आनंद लोगों को मिट्टी के लोंदे दिखाने में है जो आपने खुद बनाएँ हैं और ज़िंदगी अपनी शबाब पर होती है जब हम पूरे विश्वास के साथ अपने बनाएँ लोंदों को एक दूसरे की तारीफ भरी निगाह पाने के लिए पेश करते हैं"***[2] संदर्भानुसार शोध विषय से यह निकाल कर आया कि जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु या

[2] थोर्टन, जे० एम० फिलास्फी इन आ न्यू, पृ० – 9।

विन्यास के निर्माण में काफी कुछ सोच-विचार करता है तो जाहिर सी बात है कि उस विन्यास में संबंधित व्यक्ति का सोच-विचार आदि वस्तु के करीब आ खड़ा होता है।

निष्कर्षतः शोध को आगे बढ़ाने के क्रम में सौंदर्य की व्याख्या की गई है जिसमें विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रकट किया हैं इन विद्वानों के मतानुसार यह पता चलता है कि व्यक्ति के अंदर सौंदर्य का निर्माण भी प्रभावित सिद्धांतों व विचारों के आधार पर ही होता है। मार्क्स का सौंदर्य श्रम आधारित है वहीं अंबेडकर दलित आधारित तथा अन्य के सौंदर्य अलग-अलग हो सकते हैं। जो उसके राजनीतिक प्रतिक्रिया को व्याख्यायित करने में सहायक होता है। द्वितीय अध्याय में सौंदर्य व रजीनीति के अन्तर संबंध को व्याख्यायित किया गया है। जिससे यह निष्कर्ष निकलकर आता है कि बिना राजनीतिक के सौंदर्य नहीं हो सकता और बिना सौंदर्य के राजनीति नहीं हो सकती दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, ठीक उसी प्रकार सौंदर्य हमेशा विन्यास केंद्रित होता है तो उसमें राजनीति भी निहित होगी।

जैसा कि हम जानते हैं कला के क्षेत्र में की जाने वाली हर रचना किसी न किसी प्रतिक्रिया से निर्मित होती है अतः सामाजिक क्रिया की एक प्रतिक्रिया विन्यास/कला है, जिसका निर्माण हमेंशा किसी न किसी राजनीति व सौंदर्य से होता है। उदाहरण स्वरूप किसी भी विन्यासकर्ता के विन्यास के पीछे एक दृष्टि (सोच-विचार, सौंदर्य व राजनीति) काम करता है जिसमें समाजकार्य, बाजार, ख्याति की लालसा जुड़ी हो सकती है।

हम यह भी भली-भाँति जानते है कि मंच पर हम वही दिखाते हैं जिसकी हमें जरूरत है या वह नाटक के किसी भाग को व्याख्यायित करने में सहायक होता हो यूँ कहें कि जिस प्रकार अभिनेता का एक-एक मूवमेंट अर्थपूर्ण होता है, उसी प्रकार आहार्य की एक-एक इकाई अर्थपूर्ण (लॉजिकल) होनी चाहिए, जब हम किसी भी आहार्य के इकाई को रखने के लिए उसके अर्थ (लॉजिक) पर सोचते, विचार करते हैं तो जाहिर सी बात है कि उसमें हमारी सोच, हमारा विचार, हमारी दृष्टि उस विन्यास में निहित होती है।

राजनीति शब्द की व्यापकता से हम अच्छी तरह परिचित है प्रस्तुत शोध को भी इसी परिपेक्ष में देखाने से पता चलता है कि रंगमंचिय विन्यास एक जटिल राजनीतिक एवं सौंदर्यशास्त्रीय प्रक्रिया है जिसमें नाटककार की राजनीति एवं सौंदर्य से शुरू होती है, और वह फिर निर्देशक, अभिनेता, एवं विन्यासकर्ता से गुजरते हुए प्रेक्षक तक संप्रेषित होती है, जो दर्शक को अपने राजनीति तथा सौंदर्यपरकता को रखने पर मज़बूर करती है।